अंक – पाँच
जनवरी – मार्च 2016

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

आपके हाथ मैं हूँ "चहकने की ललक"।

हाँ, यही है मेरा नाम मुझे लिखने वाले मेरे बाल लेखको ने दिया है। ये परिवर्तन के बच्चे है जो मेरे लिए लिखते हैं।

उनका यह मानना है कि जब वह मुझसे जुड़े, मेरे लिए लिखा तो उन्होंने खुद को उन्मुक्त महसूस किया। और वह बेहद खुश थे, उन दोस्तों का आभार।

आपकी ही,
चहकने की ललक

होली

होली हिन्दुओं का पर्व है। होली में हम एक दुसरों को रंग लगाते है। होली के दिन हमलोगों के घर में पुआ बनता है। होली के दिन हम रंग खेलने के बाद शाम के समय एक दुसरे के घर रंग लगाने के लिए जाते हैं। होली के दिन हमलोग बहुत खुश रहते हैं। गाँव में सब बच्चे एक दुसरे के उपर रंग फेकते हैं। होली के दिन अपने से बड़ों के पैर के उपर रंग डालते हैं। इस दिन खुब हमलोग को पकवान खाने के लिए मिलता है। होली के दिन हमलोग नये–नये कपड़े पहनते हैं। होली का त्यौहार खुशियों का त्यौहार है। आज के दिन बच्चे बहुत खुश रहते हैं।

हमलोग गाँव में गाना बजाकर नाचते हैं और एक दुसरे को हमलोग नचाते हैं। होली के एक दिन पहले होलिका दहन होता है। और हम अपने भाषा में इसको सम्हवत भी कहते हैं।

हर्षित कुमार, वर्ग–6, भवराजपुर

अपनी बात

कहानी

राजेश का गाँव

एक गाँव में राजेश नाम का एक लड़का था। वह दिन भर इधर–उधर घुमता था। वह एक दिन जंगल में घुमने गया,

राजेश के सामने एक शेर आया, वह डर कर भागने लगा, कुछ दूर गया तो उसे एक घर दिखाई दिया, उस घर में एक आदमी था, वह बोला कौन हो तुम? राजेश बोला, मैं राजेश हूँ रास्ता भटक गया हूँ। वह आदमी बोला राजेश तुम मेरे साथ रहो।

मितेश माँझी, वर्ग–7, बंथुश्रीराम

चुटकुला

एक मच्छर एक टकले आदमी के सर पर बैठ गया तो दुसरा मच्छर बोला कि अरे यार तुम तो बहुत अच्छा घर बना लिए तो पहला मच्छर बोला कि अरे यार अभी तो सिर्फ जमीन खरीदी है।

•••

एक लड़का अपने पिता जी से बोला कि पिता जी मैं परीक्षा में पास आ जाऊँगा तो आप क्या करेंगे। मैं खुशी के मारे पागल हो जाऊँगा। लड़का बोला कि इसलिए तो मैं परीक्षा में पास नहीं होता।

•••

एक लड़का एक गदहे के पास जाकर गिर गया तो एक लड़की बोली कि अपने भैया को प्रणाम कर रहे हो क्या? तो लड़का बोला – हाँ, भाभी जी।

मनजीत कुमार, वर्ग–9 धर्मपुर

रंग रंगीली होली

कविता

होली आई होली आई
रंग रंगीली होली आई
भुलाकर गिले शिकवे
आज सबको गले लगाना है
क्या ताजा क्या लाई होली

करके रंगो की बौछार
बाटे हम सबको प्यार
अरे हम है उस देश के वासी
जिसका अदभूत है संस्कार
क्या छाई–क्या पराई
होली आई होली आई

जरा सा मुस्कुरा देना होली से पहले
हर गम को मिटा देना होली से पहले
मत सोचना कि किसने मेरा दिल
दुखाया अब तक सबको माफ
कर देना, रंग लगाने से पहले

क्या पता ये मौका फिर मिले
या न मिले, इसलिए दिल
को साफ कर लेना होली से
पहले और सबसे बोलना,
बुरा न मानो होली है।

विक्की वरनवाल, वर्ग–10, बलियाँ

कविता

एकता के रंग

हिन्दु–मुस्लिम सिख ईशाई
चारों मिलकर गाये
जात पात के बात फरे
मन में दिवस मनाये
देश हमारा भारत प्यारा
इसकी बेटा चार है
गोदी इसकी खेल पड़ी
हमें पुरा प्यार है
प्यार तोड़ने वाले की
हर कोशिश ना काम करे
भारत है तो हमसब है,
मन में यही विचार करे
खून पसीना एक करेंगे
मिलकर जतन करेंगे।

रितेश कुमार, वर्ग–5, भरौली

कविता

परीक्षा

परीक्षा का दिन जब आता है,
सबका मन घबराता है,
क्या पढ़े क्या लिखे,
सब चौपट हो जाता है,
परीक्षा का दिन जब आता है।

जो पहले से पढ़ा रहता है,
वह ही परीक्षा में कुछ लिखता,
जो पहले से पढ़ा नहीं रहता है,
वह दिन में तारे गिनता है,
परीक्षा का दिन जब आता है।

खुशी होती है, उस समय जब
अच्छा रिजल्ट आता है।
दुखी होती है उसे
जो अच्छा से नहीं लिखा रहता है।
परीक्षा का दिन जब आता है।

राहुल कुमार, कक्षा–10, धर्मपुर

पहेली

- सुन्दर–सुन्दर कली ये मेरी
  खिंचती है सबकी ध्यान
  चोंच मेरी तकतवर है
  पेड़ छेदना मेरा काम

- लम्बी टाँगों पर खड़ी रहती हूँ
  इधर–उधर देखती रहती हूँ
  धुरी जैसी चोंच है मेरी
  मार लेती हूँ मेढ़क मछली को

- सबसे पहले मैं ही जागता हूँ
  दुसरों को फिर मैं जगाता हूँ
  सुबह से जब तक हो शाम
  दाना चुनना मेरा काम

नेहा खातुन, वर्ग–6, बाबु भटकन

बसंत की काया

कविता

बसंत ऋतु जब आता है
आसमान में बादल छा जाता है,
फूलों का सब कलिया खिल जाता है।

अंधेरा खो जाता है
उजाला छा जाता है
चिड़ियाँ चि–चि गाती हैं
भौंरे गुनगुनाते हैं।

फिरोज अंसारी, वर्ग–10, नरेन्द्रपुर

कहानी

कछुए का सबक

एक नदी के किनारे छोटा लड़का मछली मारने गया। उस नदी में बहुत सारी मछली रहती थी। उस नदी में कछुआ भी रहता था। वो लड़का अपना बंसी लेकर नदी में फेका मछली पकड़ने के लिए तो उसके बंसी में एक बहुत बड़ा कछुआ फस गया। लड़का सोचा कि आज मुझे बहुत बड़ी मछली पकड़ाई है। लड़का जब उसे बाहर निकाला और वह देखा तो कछुआ था। कछुआ को देखकर वह डर गया वहां से वह अपना बंसी पानी में फेंक कर घर भाग कर आ गया। तब से कान पकड़ लिया की मछली मारने नहीं जाएंगे।

विक्की कुमार, वर्ग–5, धर्मपुर

आओ करके सीखें

प्रयोग– अम्ल और क्षार का परीक्षण

विधि– अड़हुल फूल के पत्ता पर निंबू का रस डालने पर अड़हुल का रंग नीला हो जाता है।

आवश्यक सामग्री– निंबू, अड़हुल का फूल

कुछ चर्चा– इस प्रयोग के द्वारा हमें यह पता चलता है कि अम्ल और क्षार को कैसे पहचाना जाता है। पहले हम अड़हुल के फूल पर से नींबू का रस डालते है तो फूल का रंग नीला हो जाता है जैसे हम एसीड में लिथमस पेपर को डालते हैं तो वह लाल से नीला हो जाता है। इस प्रयोग के द्वारा हम एसीड का जांच करते हैं।

राकेश कुमार एवं सुनिल कुमार, वर्ग–9, भरौली

अपनी बात

26 जनवरी

26 जनवरी के दिन हमारे स्कूल में झंडा फहराया जाता है, और हमारे स्कूल में मिठाई मिलता है। हमलोगों के स्कूल में प्रोग्राम भी होता है। बच्चे नाच, गाना में भाग भी लेते हैं। झंडा के उपर गाना गाने में बहुत ही अच्छा लगता है। हमारे स्कूल में गांव से भी लोग देखने आते हैं। हमलोगों को इसमें इनाम भी मिलता है। 26 जनवरी के दिन पूरे स्कूल में झंडा फहराया जाता है, स्कूल में जब हो जाता है तो हमलोग प्रोग्राम देखने के लिए परिवर्तन में आ जाते हैं।

श्वेता कुमारी, वर्ग–5, खेमभटकन

कविता

गणतंत्र दिवस

मोनु उठो सबेरा आया
सूरज तुम्हें जगाने आया
बिस्तर छोड़ खड़े हो जाओ
मुंह धोओ राजा बन जाओ
मुझसे भारी मेरा बास्ता
गणतंत्र दिवस पर ले जाना है
कर दी मेरी हालत खस्ता
जब परिवर्तन में आया,
खुशी–खुशी के कविता गाया
और गणतंत्र दिवस मनाये
हमको टिचर जी समझाये
परिवर्तन में हमको लाये।
बच्चों पढ़ना मुश्किल है।
इसको कुछ हल्का करवाये।

विवेक कुमार, वर्ग–5, धर्मपुर

कविता

मनभाई होली

होली आई होली आई
सबके मनको है हरसाई
बच्चों ने देखो धूम मचाई
खुब सारी मिठाइयाँ बनवाई

सुबह होते ही सारे बच्चे
बैलुन में है रंग को भरते
छुप–छुप के पेड़ या घरो में
से बैलुन को है फेकते

यह पर्व है दुशमनी मिटाने वाली
दोस्ती का हाथ बढ़ाने वाली
खुब पुआ और पकौड़ियाँ खानेवाली
सबके धुम मचाने वाली

नये–नये कपड़े पहनते
घर–घर जाके गुलाल लगाते
नये–नये लोगों से मिलते
काजु किसमीस खुब है खातें।

सुष्मिता पाण्डेय, वर्ग–10, बड़हुलियाँ

कविता

जब मैं बंदर...

जब मैं बंदर बन जाऊंगी
पेड़ों पर चढ़ जाउंगी
पेड़ों के राजा आम को
खाकर नीचे आऊंगी

जब पेड़ के माली आऐगा
पत्तों में छिप जाऊंगी
बिना फल खाये मैं
नहीं आऊंगी।

जब पेट भर जाएगा,
पेड़ पर सो जाऊंगी
जब भूख लगेगी
जोरों की तो इस
डाल से उस डाल
कुद–कुद कर खाऊंगी।

छोटी कुमारी, वर्ग–6, नरेन्द्रपुर

कविता

कितने दिनों बाद

होली आई कितने दिनों के बाद
हमलोग खेल रहे है होली
बहुत मजे की बात है।

रंग फेंक रहे है
एक दुसरे के उपर
दुसरो के मुह में रंग लगाकर
बंदर मामा बनाते हैं।

होली का त्यौहार
जब आता है,
सब मैदान में उतर जाते हैं।

एक दुसरे से गले मिलते हैं
सबको सिर झुकाते हैं
होली आई एक वर्ष बाद
खुशी–खुशी सब गाते हैं।

रतन कुमार, वर्ग–6, नरेन्द्रपुर

कहानी

बसंत ऋतु

एक बहुत बड़ा जंगल था और उस जंगल में एक राक्षस रहता था। उस जंगल में एक मैदान भी था जहाँ छोटे–बड़े बच्चे खेलते थे। उसी समय राक्षस का नजर उस बच्चों के उपर पड़ा और बच्चों को वो डाटने लगा कि तुम मेरे बाग में क्यों खेल रहे हो। बच्चों ने डर के मारे भागना चालू कर दिये।

वह समय बसंत ऋतु का था। बच्चे इस ऋतु में चारो तरफ हरियाली ही नजर आती है लेकिन उस बाग में बसंत ऋतु नजर नहीं आ रहा था क्योंकि राक्षस उस ऋतु को ही खा गया था। तो बच्चे उस राक्षस का मजाक बनाकर चिढ़ाने लगे की तुमलोग मत जाओ उस राक्षस के पास वह बसंत ऋतु को खा गया है। बच्चे इस ऋतु में काफी खुश नजर आते है वह सोचते है कि ऐसा ऋतु हमेशा रहता। यही है राक्षस और बसंत ऋतु की कहानी।

विष्णु कुमार, वर्ग–9, खेमभटकन

शिक्षक की कलम से

होली

लाल, पीला, हरा, गुलाबी
मिल गया सब रंग होली में।
बच्चे, बुढ़े, जवान मिल,
सब कर रहे हुड़ दंग होली में।

पूआ, पूड़ी, गुझिया, पापड़
छन रही है खुब देखों भंग होली में
ढोलक, झाल, मजीरा, करतल
बज रहा है झुम के मृदंग होली में।

फूलों की महक चहक चिड़ियों की,
भर रहे नव उमंग होली में।
मारी पिचकारी रंग भरकर जब
हो गया सराबोर सब अंग होली में।

बाल गोपाल किशोरी राधिका
और गोपी ग्वाल सब खेले होली में।
दूर सरमाय क्यों बैठ रहे यूं
आ तूझे भी लगा दूं मैं रंग होली में।

सुधीर कुमार सिंह, शिक्षक, बलियाँ

कविता

जंगल में रात

जंगल में रात जहाँ कितना अंधेरा है भुख भी लगी है जहाँ खाने को कुछ भी नहीं मिलता काश अभी हम घर में होते।

वहाँ कितनी रोशनी होती
सोने को मन करता है
नींद नहीं आती है

डर है कि शेर न आ जाए
वहाँ खाने को कुछ नहीं मिलता
टीवी देखते पढ़ाई करते
काश कभी हम घर में होते

माधुरी कुमारी, वर्ग–10, बलियाँ

कविता

पढ़ाई चालु

परीक्षा जब नजदिक आता है
जोरो शोरो से पढ़ाई चालू हो जाता है। बच्चे खुब मन लगाते हैं
पढ़ाई में जुट जाते हैं।

खुब ध्यान लगाते हैं
किताब को चट कर जाते हैं
रात में जग जाते हैं
खुब रटा लगाते हैं।

सुबह शाम दोपहर रात
किताबे पढ़कर चटकर जाते हैं
परीक्षा जब नजदीक आता है
बच्चों का पढ़ाई चालु हो जाता है।

विनय कुमार, वर्ग–8, भवराजपुर

अपनी बात

नया साल

1 जनवरी के दिन नया साल हम मनाते हैं। हमलोग उस दिन बहुत खुश रहते हैं कि पुराना साल खत्म हो जाता है और नया साल आ जाता है। नया साल के दिन हमलोगों के घर में पकवान बनता है। हमलोग आज के दिन पिकनीक मनाने जाते हैं। पिकनीक मनाने के लिए घर से दुर जाते है और वहाँ खुद से बनाते है खाना और खाते हैं। नया साल के दिन सबको 'हैपी न्यू इयर' बोलते है। बड़ों से आशिर्वाद लेते है कि पूरा साल अच्छा से बिते।

रुकशार खातुन, वर्ग–5, नरेन्द्रपुर

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स